



Hkkjr esa l [kki u dk dkj .k HkkSxkyd l eL; k ds fo'ks'k l nHkZ esa

डॉ० कामदेव यादव

l gk; d i k/; ki d& HkkSxky foHkkx
ckcyky ; kno dkyt] Mkkkh] x; k

*l [kk og HkkSxkyd l eL; k gs tc tu o e/; vDVcj ds chip yxkrkj
चार सप्ताह तक पांच सेमी० से कम वर्षा होती गA vFkkZ- ty dh miyC/krk
t: jr l s de gsrh gA tks tyh; vl rnyu dks i nk djrh gA fl pkbZ vk; ksx ds
अनुसार 75 सेमी० से कम वर्षा वाले क्षेत्र अकालग्रस्त क्षेत्र कहलाता है। दूसरी तरफ
मानसून अनिश्चिता जैसे-वैर्षा देर होना, जल्दी आना, बिना वर्षा किये लौट जाना
vkfn l [ks dk i e [k dkj .k gs A l [kk vc i k d frd dkj .k de ekuoh; dkj . l s
vf/kd ?kVr gks jgk gA bl i dkj Hkkjr esa e: LFkyhdj .k ij] pkFkh fj i k VZ 2011
ds vu [kj Hkkjr dk yxHkx 69-08 प्रतिशत क्षेत्र अर्थात 228 मिलियन हेक्टेयर शुष्क
या अर्द्धशुष्क हैं। जो देश के कुल HkkSxkyd {ks=Qy dk 24-8 i fr'kr vFkkZ 81-45
fefy; u gDV s j {ks= e: LFkyhdj .k dh i f Ø; k l s xqt j jgk gA

Hkkjr dk l [kk i o .k {ks=



- [ks=] -जोन 1-अत्यधिक
- [ks=] -जोन 2- गम्भीर
- [ks=] -जोन 3-सामान्य
- [ks=] -जोन 4-सूखारहित

सिंचाई आयोग ने वर्षा की मात्रा व उसकी विचलनशीलता के आधार पर सूखा

1- Lku[kk {ks=

2- l w[kk xLr {ks=

‘सूखा’ क्षेत्र वैसे क्षेत्र होते है जहाँ वर्षा 50 सेमी० से कम होती हो तथा वर्षा की विचलनशीलता 25 प्रतिशत से अधिक होती हो। इस क्षेत्र के अन्तर्गत प० jktLFkku] सौराष्ट्र व कच्छ के क्षेत्र आते है।

‘सूखा गस्त’ क्षेत्र वैसे क्षेत्र है जहाँ वर्षा 75 सेमी० से कम तगि 50 सेमी० से vf/kd gkrh gkA तथा वर्षा की विचलनशीलता सामान्यतः 25 प्रतिशत होती है। इसके vrxr jktLFkku] प० हिमालय, महाराष्ट्र, कालाहांडी आदि क्षेत्र आते है। इस क्षेत्र के fodkl grq tyi.zfku] enk i.zfku o Ql y i.zfku ds l kFk&l kFk okfudh dk; Øe o i'kj kyu fodkl grq l w[kk i.d.k {ks= dk; Øe pyk; k tk jgk gA

Hkkjr ea o"kkz ds vk/kkj ij l w[kk xLr {ks=





सूखे और शुष्कता में निकट सम्बंध है। दोनों पानी की कमी के संकेत हैं किंतु शुष्कता एक स्थाई दशा है जबकि सूखा एक अस्थायी स्थिति है। इस [dkj dkj.k] स्वरूप व विशेषता के आधार पर सूखा चार प्रकार के होते हैं – मौसमी विज्ञान सूखा, विज्ञान सूखा, कृषीय सूखा, पारिस्थितिकीय सूखा।

'विज्ञान सूखा' तब होता है जब वार्षिक वर्षा अपने सामान्य [dkj r l s] 25 प्रतिशत कम होती है। यह मौसम विशेष में कम वर्षा होती है। जब पृष्ठीय जल [rFkk Hkfr ty dk Lrj fxjrk tkrk gS rks ml s ty foKkuh l [kk dgrs gA] 'कृषि सूखा' तब पड़ता है जब पौधों की टिकाऊ वृद्धि हेतु आवश्यक मृदा के नमी के [Lrj es deh gks tkrh gS *ikfjLFkfrd l [kk* rc iMrk gS tc ikfjLFkfd r= dh mRikndrk ?kV tkrh gA rFkk ikdfrd lk; kbj.k {kfrxLr gks tkrk gA bl idkj bl {ks= ea dgy tul a[; k dh 12 ifr'kr tul a[; k bl {ks= ea fuokl djrh gA n'sk dk yxHkx 30 ifr'kr {ks= l [kkxLr gA yxHkx 5 djkm+ ykx l [ks l s ihfMf gA rFkk dqcks s x; s {ks= dks 68 ifr'kr Hkr bl l s iHkfor gkrk gA

vr% l [kk vkus ds nks iæq[dkj.k gS & ekuoh; dkj.k o ikdfrd dkj.k जिसमें प्राकृतिक कारण में मानसून की अनिश्चितता [dks ekuk tkrk gS ftl l s Hkjr] में वर्षा की कमी, असमय वर्षा लम्बे समय तक मानसून विच्छेदन तथा वर्षा का असमान वितरण रहना है। इसके साथ-साथ भारत में 'पर्वतों की स्थिति अर्थात् पृष्ठ प्रदेश में सूखा स्थिति पूर्वा जेट स्ट्रीम उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र में वायुमण्डल को [detkj dj nrk gA ftl l s l epz dh vkj l s pyus ok; q detkj gks tkrh gS] जिससे वर्षा कम [gkrh gA , yfuuka /kkjk fgln egkl kxj dh gMyk l sy dks iHkfor



djrk gA 19787&88] 2002&03 rFkk 2009 es rdk l w[kk blgha ds ifj.kke Lo: lk ?kfVr gqk gA

tcfd ekuoh; dkj.k ea [kjc tyiaaku ouka dh dVkbz ftl l s enk अपरदन बढ़ता है। वाष्पोत्सजन कम होना, Hkfxr ty ea fxjkoV vkfn iHkkfor लाक्षणित होते हे। सतही वनस्पति नष्ट होने से चट्टानों नग्न हो जाते है जिससे l rgh rki ea of) gkrh gS ftl l s enk vijnu o catj Hkfxe dk foLrkj gkrk gA जिससे सूखा के प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाते है। शुष्कता उच्च होने ij enk ea केशिकत्व प्रभाव से मृदा में अम्लीयता व क्षारीयता बढ़ती है। इतना ही नहीं वैश्विक rki u l s l w[ks rks vkrk gh gS l kFk gh l kFk i kdfrd vki nk, aHkh c<+ tkrh gA

bl izdkj l w[ks l s [kk | ku ¼vdky½ ty ¼tydky½ rFkk pkjs ¼r. kdky½ dh deh iæq[k gS ftl s rhuka dh deh dks *f=dky l dr* dgk tkr kgA ftl l s rhu izdkj l s iHkko iMfk gS & l ekftd] vkfFkd o lk; kbj.kh; A iæq[k *vkfFkd iHkko* रूप में खाद्यान्न संकट, कृषि उत्पादकता में कमी, प्रति व्यक्ति आयु मेंकमी, लू पशुओं dk iyk; u o mudh eR; q [kk | l j {kk ea deh rFkk vFKD; oLFkk ea fuEu l ef) nj प्रमुख है। सामाजिक प्रभाव में कुपोषण, सामाजिक असंतोष गरीबी, बेरोजगारी, चोरी, शिक्षावृत्ति, शिक्षा मे कमी आदि प्रभावित होंगेA bl h izdkj lk; kbj.kh; iHkkoka ea Hkfxr ty ea fxjkoV] enk vijnu l s enk ea yo.kh; rk o {kkjh; rk] tD fofo/krk es ækl] e: LFkyhdj.k dk fodkl] ouka dk ækl vkfn iæq[k gA

vr% सूखे की विभीषिका को कम करने तथा उससे मुक्ति पाने के लिए हम vki nk izaku ds ek/; e l s fuokj.k o l j {kh dk; Øe ijkalk djus gkxs ftl ds



I UnHkZ&

- 1- ओझा, एस० के० 2015 : भारत का भूगोल बौद्धिक प्रकाशन, पृ० 171, 172
- 2- तिवारी, आर० सी० भारत का भूगोल (2010), पृ० 609 से 611
- 3- HkkxhjFk tuojh&ekpZ 2010½ dUnh; ty vk; kx] HkkjrA
- 4- fl g] l folद्र : जलवायु विज्ञान (2014) पृ० 33, 389– 409